शिक्षा की नई चुनौतियाँ

परिचय :

"शिक्षा ही है विद्या धन,
विद्या धन से ही मिलता प्रकाश,
प्रकाश से ही, होता हमारा
~~जीव~~ जीवन साकार।"

शिक्षा ही जीवन को मार्गदर्शन देने का काम करती है। आज के इस जमाने में शिक्षा को बहुत ही महत्वपूर्ण देना चाहिए। शिक्षा हमें सबसे पहले अपने घर परिवार में तथा मिलता है तथा शिक्षा का दुसरा स्थान विद्यालय है। शिक्षा हमारे जीवन की दिशा को सुव्यस्थित करती है। यह हमारे हमारी मानसिक विकास करती है। ~~य~~ शिक्षा के हमें विवेकी तथा बुध्दिमान बनाती है जिससे हम हमारे जीवन में सही निर्णय या गलत का फैसला खुद कर सके।

शिक्षा जो है हमारे समाज की गलत धारणाओं को मिटाती है।

लेकिन भी आज हम शिक्षा का महत्व को समझने बूझने में असमर्थ है।

शिक्षा की चुनौतियाँ :—

आज के इस जमाने कई सारी चुनौतियों के कारण हम शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ रहते है। जैसे :—

~~(1) आज हम~~

(1) **आर्थिक समस्या** :— जाने न जाने लेकिन आज के इस युग में सभों को पता है कि बहुत से बच्चे जो है गरीब परिवार या झुग्गी ~~झोपि~~ झोपियों से आते हैं। इन सारे ~~बि~~ बच्चों को तो स्कूल का ~~सप~~ सपना देखने का भी हिम्मत नहीं होती है। ~~बेचारे~~ रोज दिन कई सारे परिवार में नौकरियाँ नहीं होते है ~~जो~~ परन्तु वे मध्यम वर्ग के तो होते ही है। फिर भी आज कल की बढ़ती स्कूली फीस को देखते के कारण वे ~~एक~~ विद्यालय जाना

ही छोड़ देते हैं।

(2) **महंगाई के बढ़ने से** :- 21 वीं सदी का युग तो महंगाई का युग है। आज अभी के ~~के~~ समय में पैसा या ~~जरूरत भर~~ आय न होने पर जीवन जीना बहुत कठिन सा प्रतीत होता है। जैसे-जैसे हम पुरानी को छोड़ नए युग में प्रवेश करते जा रहे हैं। वैसे-वैसे ही दिन-प्रतिदिन महंगाई का बोलबाला भी बढ़ते जा रहा है। ~~इस~~ महंगाई के बढ़ने से तो जिन्दगी जीना ही दुभर हो गया है तो ~~हम हर कैसे~~ हम यह कैसे कह सकते हैं कि सब कोई शिक्षा प्राप्त करने ~~सक्षम~~ कर पाये।

~~भले ही शहर के लोग अच्छी शिक्षा ग्रहण कर ले, लेकिन सुदूर गाँवों में रहने वाले भी~~ य महँगाई भी एक कारण है जिससे बहुत से ~~न~~ विद्यार्थी हतोत्साहित हो जाते हैं।

(3) **आवश्यक विद्यालय भवनों का न हो पाना** :-

मैं खुद भी कह सकती हूँ कि बहुत से बच्चे जो स्कूल का नक्शा भी नहीं देख पाते हैं कि विद्यालय कैसा होता है? वहाँ कौन रहता है और वहाँ क्या किया जाता है? ~~आज भारत~~ भारत सरकार आज शिक्षा का अभियान चलाते हुए, कई सारे नारे लगाते हैं कि:-

"हर जन को जगाओ,
शिक्षा का दीपक जलाओ,

फिर भी आज बहुत से सुदूर गाँवों में ~~श~~ विद्यालय का नामोनिशान तक नहीं है। यदि है यहाँ विद्यालय है भी, तो कभी शिक्षकों की कमी हो जाती है। ऐसे ही कई सारे ~~ब~~ होनहार बच्चे देश के कोने - कोने छिपे हुए हैं लेकिन ~~आज~~ कुछ कारण वे होनहार बच्चे अपनी प्रतिभाओं या क्षमताओं को निखार पाने में असमर्थ हैं। या वे खुद की क्षमता या शक्ति को पहचान पाने में असमर्थ हो जाते हैं। क्योंकि आज तक उन देहाती गाँव तक ~~व~~ विद्या रूपी प्रकाश ही पहुँच ही नहीं

पाया है। क्योंकि विद्यालय शब्द का अर्थ ही
ही है विद्या + आलय, अर्थात विद्या का
घर या भंडार। जहाँ सारे बच्चे जाकर
लेते हैं विद्या और वे खुद बन जाते
हैं विद्या रूपी आलय। पुन: वे अपने घर-
बार, तथा समाज तथा देश को विद्या
रूपी प्रकाश ~~को~~ फैला कर देते हैं रोशन।

यदि तो है जीवन का असली रूप
लेकिन बेचारे जो न विद्यालय देखे हैं वे
अपना जीवन कैसे साकार कर पायेंगे? ~~क्यों~~
कभी तो गाँवों में ~~की~~ सरकारी विद्यालय भी
रहता है। ~~लेकिन वि~~ वहाँ पर ~~क~~ 1 से 10
तक की कक्षाएँ भी होती हैं। ~~वहाँ सिर्फ 5~~
इन सारी जगहों में सिर्फ 5 या 6 ही शिक्षक
ही उपलब्ध होते हैं जिनके वजह से वहाँ
पढ़ाई करने वाले बच्चे अच्छी तरह से शिक्षा
ग्रहण नहीं कर पाते हैं। क्योंकि एक ही
शिक्षक 2 या 3 कक्षाओं को खुद संभालते
हैं ~~इस प्रकार~~ और वही शिक्षक उन कक्षाओं

के सभी विषयों को पढ़ाते हैं। ~~एक~~ ~~यदि~~ एक ही शिक्षक के होने कारण उन्हें पूरी अच्छी ज्ञान नहीं मिल पाती है।

③ पुराने समय में शिक्षा की नीति और ~~अ~~ आज की शिक्षा नीति में आए परिवर्तन :—

स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद सिर्फ लड़को को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार था लड़कियों को सिर्फ घरेलु काम को करने के लिए ही कहा जाता था। लड़कियों को विद्यालय जाने इजाजत नहीं थी। बहुत पहले भारत में सिर्फ उच्च ~~के~~ वर्ग के लोगों को ही शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। मध्यम वर्ग तथा नीच जाति जाति को कोई इजाजत नहीं थी। फिर भी इन सभी नियमों को दरकिनार करते हुए हमारे संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने शिक्षा ग्रहण की। ~~के~~ मध्यम वर्ग के होने डॉ. भी

कारण डॉ॰ अम्बेडकर को कई सारी कठिना-ईयों ~~का सामना~~ तथा अपमानों का सामना करना पड़ा। ~~आज यदि हम~~

लेकिन अभी के इस समय में हम सब भारतीय स्वतंत्रत रूप से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। ~~आज~~ इनके बावजूद भी हम शिक्षा की चुनौतियों का तो सामना करते हैं। ~~वे वे~~ जैसे– आज भी बहुत जगहों में वे सारी पुरानी रूढ़ी वादियाँ पूर्ण रूप से खत्म नहीं हो पायी है। जिसकी वजह से हर जगह शिक्षा का संपूर्ण विकास और विस्तार नहीं है। आज भी हमें कहीं ~~कहीं~~ न कहीं जमींदारों या गाँव का मालिक तो सुने ही होंगे।

सरकार ~~हम~~ हमारी सेवा के लिए बहुत सी जरूरत की व्यवस्थाओं ~~को~~ को उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक पैसा या समान देती है। लेकिन आज ये जमींदार खुद के जेबों को भरते हैं और गाँवों के लोगों के लिए स्कूलों, भवनों

तथा अन्य कार्यक्रम को रोक देते हैं। ~~का~~ ~~तो~~ कभी कभी तो सरकार भी ~~लोगों की~~ बच्चों की जरूरतों को अनदेखा कर देती है।

निष्कर्ष :– हमें चाहिए कि सबका भला होने या सबकी आवश्यक~~ता~~ शिक्षा मिलने से ही देश का नाम रोशन हो सकता है तथा देश विकाशील देशों की गिनती में न आकर विकसित देशों की गिनती में आ सकती।

"शिक्षा ही एक ऐसी कुंजी है जो हमारे जीवन ~~क~~ तथा पूरी दुनिया को बदलने समर्थ्य रखती है।"

आज हमें शिक्षा से जुड़ रहे हरेक समस्याओं को मिटाने का प्रयास कदम से कदम मिलाकर करना चाहिए। तथा हमें ~~हमारी ही~~ आत्मनिर्भरता से ~~इसकी~~ शिक्षा से जुड़ रही समस्याओं के लिए आवाज

उठना चाहिए, वो आवाज सिर्फ हमारे ही गाँव या शहर के नेताओं तक नहीं रहने देना बल्कि सरकारी तक हमारी आवाजों को बुलन्द करना चाहिए ताकि हमारी आवश्यकताएँ सरकार तक पहुँच जाये। यदि हमार देश का विकास चाहते है तो सबसे पहले शिक्षा की महत्व को हरेक जन-जन के मन मास्तिष्क में प्रभाव डालना है। क्योंकि एक कहावत है –

"सोते हुए को जगाओ,
सपनों की दुनियाँ में ही
न खो जाओ,
जाग कर, करो जो तो सही से काम
तभी मिटेगी, समस्या तुम्हारी।"

——— x ———